

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय  
वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह  
ता:-०६/०९/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित )  
पाठ:दशमः पाठनाम जटायोः शौर्यम्

**श्लोकः ७. तस्य तीक्ष्ण नखाभ्याम् तु चरणाभ्याम् महाबलः ।**

**चकार बहुधा गात्रे व्रणान्पतगसत्तमः॥**

**अन्वयः-**(ततः) पतगसत्तमः महाबलः(खगः) तीक्ष्णनखाभ्यां चरणाभ्यां

तस्य गात्रे बहुधा व्रणान् चकार ।

**शब्दार्थः-**

तीक्ष्णनखाभ्यां – तेज नाखूनों से

चरणाभ्यां -पैरों से , तस्य - उसके (जटायु के)

महाबलः - बहुत बलशाली

पतगसत्तमः- पक्षियों में उत्तम (श्रेष्ठ)

चकार – कर दिए , बहुधा – बहुत से

गात्रे – शरीर पर , व्रणान् – घावों को

**अर्थ-**

उस उत्तम तथा अतीव बलशाली पक्षी (जटायु) ने अपने तीखे नाखूनों

तथा पैरों से उस रावण के शरीर पर बहुत से घाव कर दिए ।